आइला छू...

(शिक्षा एवं बाल अधिकार विशेषांक)

जून, जुलाई एवं अगस्त-2012

सम्पादकीय

प्यारे बच्चों एवं दोस्तों,

आप सबको याद होगा, आप सबके द्वारा ही तैयार की गयी आपकी पत्रिका 'आइला छू' आयी थी। उस समय भी आप सब ने अपने अनुभव, सपने, कविताएं और अपनी अपेक्षाएं लिखित रूप से व्यक्त की थी। लेकिन तब आपके अनुभव बाल्यावस्था के थे और इस अंक में आपकी अपेक्षाएं, सपने, सब बदल गये हैं। अब आप किशोरावस्था में पहुँचकर इनको मूर्त रूप देने को तैयार है। इन सब के पीछे आपकी लगातार समय-समय पर आयोजित होने वाले बाल मेला, खेल कूद कार्यक्रम, जिला स्तरीय जनसुनवाईयों व बाल मंच/ किशोर मंच की बैठकों में शामिल होने व हर मुद्दे पर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करना है।

आप लोगों में से ही हमारी कई बहनों ने विगत 29, मार्च 2012 को रोजी-रोटी संगठन के रतहरा, कार्यालय पर किशोरियों की मीटिंग में यह बात उठाई कि उनकी, अपेक्षाएं, उनकी जरूरतें व उनसे सम्बन्धित मुद्दों को उनकी पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जाए। जिसके बाद से हम सब ने लगातार तैयारी जारी रखी। जिससे इस पत्रिका का प्रकाश सम्भव हो पाया।

आपके द्वारा लिखे गये आपके सपने, आपकी लोगों से अपेक्षाओं के साथ-2 हमने शिक्षा का अधिकार, विधालय प्रबन्ध समिति, बाल अधिकार, आपके द्वारा खेले जाने वाले खेल, कविताएँ, चुटकुले व कहानियां भी शामिल की हैं। निःशुल्क व अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009, के अनुसार 6 से 14 साल के हर बच्चे को अपने पड़ोस के स्कूल में निःशुल्क और अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा को पूरा करने का अधिकार होगा।

बच्चों की शिक्षा की समग्र और निःशुल्क व्यवस्था के साथ-2 विधालय प्रबन्ध समिति की व्यवस्था कर इस अधिनियम में सामाजिक भागीदारी की पुख्ता व्यवस्था कर दी गई है। उपरोक्त अधिनियम में यह भी प्रावधान है कि कोई भी स्कूल या व्यक्ति बच्चे का दाखिला देते समय कैपिटेशन शुल्क नहीं लेगा, और न ही बच्चे या उसके माता-पिता या अभिभावक को चयन की प्रक्रिया हेतु बाध्य करेगा आदि प्रावधान निःशुल्क व अनिवार्य बाल शिक्षा अधिनियम, 2009 की ऐतिहासिक विशेषताएं हैं। जिनकी जानकारी आप सबके लिए बहुत जरूरी है। आप सबके द्वारा ही शिक्षा के अधिकार पर आयोजित की गयी जिलास्तरीय जन सुनवाई में उठाये गये मुद्दों व अपने अनुभवों से ही मितौली ब्लाक के सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता व ढांचे में सुधार आया है। बाल अधिकार की जानकारी पाकर ही बाल मंच व किशोर मंच के जरिये आपके द्वारा बच्चों की तमाम मुद्दों पर सहभागिता सुनिश्चित हो पाई है, जो कि इसमें शामिल भी है।

आशा करती हूँ कि यह अंक आपको पसंद आयेगा और आप अपनी प्रतिक्रिया जरूर लिखकर भेजेंगे।

आपकी दीदी
रागिनी

अनुक्रमणिका

क्र0सं0	विवरण	पृष्ठ सं0
	सम्पादकीय	
1.	बच्चों के अधिकार	1–4
2.	आओ जाने अपने स्कूल को	4–5
3.	आओ जाने गिट्टी चोर	6
4.	आओ खेलें खो–खो खेल	6
5.	मेरे दोस्त	6
6.	मेरी अपेक्षाएं	7
7.	कविता	8
8.	मेरी अपेक्षाएं : ग्राम प्रधान से	8
9.	मेरे विचार	8
10.	मुझे बनना है डॉक्टर	8
11.	मेरी शिक्षा	9
12.	मेरी कहानी	9
13.	मुझे बनना है : सेना नायक	9
14.	मेरी अपेक्षाएं : ग्राम प्रधान से	9
15.	मेरी ख्वाहिश	10
16.	मेरा सपना व अपेक्षाएं	10
17.	गर्मी की छुट्टियां	10
18.	मेरा सपना	10
19.	मैंने जो सीखा...	11
20.	मेरा सपना	11
21.	मेरी बात	11
22.	शिक्षा का महत्व	11
23.	बड़ा ही महत्व है	12
24.	कविता	12
25.	मेरा दोस्त	12
26.	हमारे सपने	13
27.	सरकार से अपेक्षा	13
28.	मेरी अपेक्षाएं	13
29.	मेले का वर्णन कहानी	14
30.	कविता	14
31.	कृष्ण गीत	15
32.	छिपा हुआ खजाना	15
33.	कविता	15
34.	एक कहानी	16
35.	कविता	16
36.	बुझनिया (पहेली)	16
37.	वो मेरी भूल थी...	16
38.	मेरा सपना	17
39.	एक कहानी	17
40.	My Expectation	17–19
41.	Poem	19
42.	What school looks like in Germany	19–20

बच्चों के अधिकार

भूमिका

हर व्यक्ति की जिन्दगी में बचपन की एक खास अहमियत है। यह ऐसा वक्त है जब परिवार और बच्चों की देखभाल करने वाले वयस्क रिश्तेदारों और समुदाय के सदस्यों को उन्हें पढ़ने, सीखने और खेलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उम्र का यह दौर स्वस्थ और सार्थक भावी पीढ़ियों के विकास में सबसे अहम भूमिका निभाता है। 1989 में अनुमोदित बाल अधिकार समझौते में मानव अधिकारों के आधार पर बचपन की एक नई परिभाषा दी गई। इसने बच्चों के जीवन रक्षा, स्वास्थ्य और शिक्षा के अधिकारों को पूरा करने में उल्लेखनीय प्रगति के एक नए युग की शुरूआत की। इसके लिए आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की व्यवस्था की गई और बच्चों को शोषण, दुरूपयोग और हिंसा से बचाने वाले संरक्षित माहौल की रचना करने की आवश्यकता की समझ बढ़ी है।

गरीबी में जीने वाले बच्चे जीवन रक्षा, स्वास्थ्य और पोषण, शिक्षा, भागीदारी और क्षति, शोषण और भेदभाव से संरक्षण के अपने अधिकारों से वंचित रह जाते है। लाखों बच्चे पोषण, पानी, स्वच्छता सुविधाओं, बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं, आवास, शिक्षा और सूचना की सुलभता से गम्भीर रूप से वंचित हैं।

संरक्षण और गरिमा के अधिकारों से वंचित बच्चे भी मुश्किलों के शिकार होते हैं। हर वर्ष लाखों बच्चे शोषण, हिंसा और दुरूपयोग के शिकार हो रहे हैं जो उनसे उनका बचपन छीन लेता है और वे अपनी प्रतिभा के अनुरूप पूरी तरह विकसित नहीं हो पाते है।

ऐसा लगता है कि बाल अधिकार समझौते में बच्चों से जिस बचपन का वायदा किया गया है उसका लाखों-करोड़ों बच्चों के लिए कोई अर्थ नहीं है। उन्हें परिवार के माहौल में ममता, देखभाल और संरक्षित बचपन का अधिकार विरासत में नहीं मिलता और न ही अपनी प्रतिभा को पूरी तरह विकसित करने के लिए बढ़ावा दिया जाता है। माता-पिता बनने पर उनकी अपनी सन्तानों के सामने भी अपने अधिकारों से वंचना का खतरा बना रहा है।

लेकिन ऐसा होना नहीं चाहिए। हमारे सामने बच्चों के अधिकारों को पूरा करने का एक बेजोड़ अवसर मौजूद है। बाल अधिकार समझौते के लगभग विश्वव्यापी अनुमोदन और बच्चों के अधिकारों तथा कल्याण से जुड़ी अन्य अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संधियों को मिले समर्थन से साबित हो गया है कि इरादे तो नेक हैं। ज्ञान, धन, प्रौद्योगिकी, रणनीतियां और जनशक्ति जैसे संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। लक्ष्य भी स्पष्ट है। सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों और 'ए वर्ल्ड फिट फार चिल्ड्रेन' के व्यापक उद्देश्य हासिल करने से बच्चों के लायक एक बेहतर दुनिया बनाने में बहुत मद्द मिलेगी।

यूनिसेफ का मानना है कि दुनिया में हर जगह सभी बच्चों को उनके अधिकार प्रदान किए जा सकते है, बशर्ते, दुनिया उनके पालन का संकल्प दिखाए और इस तरह के उपाय करें :

- बच्चों के प्रति अपने नैतिक और वैधानिक दायित्वों के प्रति संकल्प और निष्ठा दोहराई जाए।
- सामाजिक आर्थिक विकास के प्रति मानव अधिकारों पर आधारित दृष्टिकोण अपनाया जाए। विभिन्न देश मानव विकास की रणनीतियां बनाते समय अधिकारों को केन्द्रबिन्दु मानकर बच्चों के लिए आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं को प्राथमिकता दे सकते हैं और एक संरक्षित माहौल की रचना कर सकते हैं।
- विशेष रूप से बच्चों को ध्यान में रखते हुए सामाजिक दृष्टि से जिम्मेवार नीतियां अपनाई जाएं।
- बच्चों के हित में अतिरिक्त धन लगाया जाए।

बचपन दुनिया के भविष्य की बुनियाद है। बहुत से लोग देश के हर बच्चे को अपना बचपन जीने का अधिकार देने के लिए सभी स्तरों पर अभिनव तरीकों से प्रयास कर रहे हैं। हमें भी उनका अनुसरण करना चाहिए।

इस समय सशक्तीकरण का दौर चल रहा है। निर्बल वर्गो, महिलाओं एवं अन्य उपेक्षित समूहों के सशक्तीकरण के लिए विभिन्न तरह के सरकारी, गैर-सरकारी प्रयास जारी हैं। उन्हीं में से बच्चें भी एक हैं। बच्चों के अधिकारों के बारे में सोचना भी पिछले जमाने के लिए एक बहुत बेतुकी बात थी। लेकिन नए सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों ने लोगों का ध्यान इस ओर भी खींचा है और स्वयंसेवी संस्थाओं की बड़ी संख्या इस मोर्चे पर काम कर रही हैं। अतः इस मोर्चे पर काम करते समय बच्चों के अधिकारों के बारे में और अपने कार्यभारों के बारे में स्पष्टता का रहना आवश्यक है।

बच्चों के अधिकारों को चार श्रेणियों में बाँटा गया है:

१. जीवन का अधिकार

एक बच्चे के जीवन के लिए जिन-जिन सुविधाओं की आवश्यकता होती है उनका उसके लिए उपलब्ध होना उसके अधिकार की श्रेणी में आता है। यह एक नया नजरिया है और सबसे पहले इस नजरिये पर मजबूत पकड़ होने से ही हम अपने कार्यभारों को बखूबी अंजाम दे सकते हैं।

1. बच्चे जब जन्म लेते हैं तभी से उनके अधिकारों का सिलसिला शुरू हो जाता है। जन्म लेते ही उसे जीवन का अधिकार प्राप्त हो जाता है। लेकिन प्रायः यह देखा जाता है कि बहुत अधिक मामलों में गरीबों के बच्चें जन्म लेने के साथ ही मर जाते है और यहां तक कि माताओं का जीवन भी खतरें में पड़ जाता है तथा उनकी मृत्यु की संख्या भी कम नहीं है। इसलिए, सुरक्षित और सफल प्रसव का प्रबंध होना उनका पहला अधिकार है।
2. जन्म का पंजीकरण होना भविष्य में अनेक सुविधओं की प्राप्ति में सहायक होता है। इसलिए, जन्म के तुरन्त बाद उनका पंजीकरण होना चाहिए। जन्म और मृत्यु का पंजीकरण उपलब्धियों और विफलताओं का आंकलन कर आगे बढ़ने में सहायक होता है।
3. भविष्य में कई घातक बीमारियों से बचने के लिए अर्थात् सुरक्षित जीवन के लिए बच्चों को 5 वर्ष की उम्र तक कई टीके लगाए जाते हैं। यह टीकाकरण अवश्य ही सुनिश्चित होना चाहिए। इसके लिए इलाके में ए०एन०एम० की तैनाती पर ध्यान देना चाहिए।
4. परिवार की समृद्धि पर बच्चों के उचित देखभाल की व्यवस्था निर्भर करती है। इसलिए मातृत्व लाभ योजना, वृद्धावस्था पेंशन और विधवा पेंशन योजना को सुनिश्चित किया जाना चाहिए क्योंकि इन्हें आर्थिक राहत मिलने से परिवार के बच्चों को भी लाभ होगा। इसी प्रकार मिड-डे-मील योजना के नियमित कार्यान्वयन पर भी नजर रखनी चाहिए।
5. परिवारों के लिए राशन कार्ड खासकर गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों के लिए बी०पी०एल० कार्डो की व्यवस्था पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही साथ, जन-वितरण प्रणाली के तहत राशन की दुकानों पर नियमित तौर पर आपूर्ति की व्यवस्था होनी चाहिए।
6. दरअसल, बच्चों के अधिकार पर कार्यवाही गर्भावस्था से ही शुरू हो जाती है। सुरक्षित प्रसव के लिए गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण कराना आवश्यक होता है, जिसके बारे में सतर्कता बरतने के साथ-साथ समुदाय को जागरूक करना अधिक महत्वपूर्ण है। जिन गाँवों में आई०सी०डी०एस० केन्द्र है वहां से भी गर्भवती महिलाओं से संबंधित सेवाएं प्राप्त करनी चाहिए।
7. आई०सी०डी०एस० केन्द्र द्वारा किशोरियों को प्रदान की जाने वाली सेवाओं की प्राप्ति के लिए भी सतर्कता और जागरूकता की आवश्यकता है।
8. चूंकि आंगनबाड़ी केन्द्र महिलाओं और बच्चों को महत्वपूर्ण सेवायें प्रदान करते है, इसलिए उनकी सक्रियता बरकरार रखने पर हमें नजर रखनी चाहिए।
9. कामकाजी महिलाओं के लिए बच्चा दोहरी समस्याएं पैदा करता है। एक तो महिलाएं अपना काम ठीक से नहीं कर पातीं और दूसरे, बच्चों की भी उचित देखभाल नहीं हो पाती। इसलिए, हमें क्रेश कार्यक्रम के अंतर्गत आने वाली सुविधाओं को उपलब्ध कराने पर ध्यान देना चाहिए।
10. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों और उप-केन्द्रों की सक्रियता को बरकरार रखवाने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि यही वह स्थान है, जहां से प्राथमिक और बुनियादी स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त की जा सकती हैं।
11. ऐसे परिवार जिनके पास अपना घर नहीं हैं, उनकी सूची बनाकर उन्हें इन्दिरा आवास योजना के अंतर्गत लाभान्वित कराना चाहिए, क्योंकि अपना घर होने पर ही बच्चों की अच्छी देखभाल हो सकती है।
12. बिना जमीन वाले परिवार तरह-तरह की समस्याओं से जूझते रहते हैं। एक तो ऐसे हैं जिनके पास जमीन है ही नहीं। दूसरे ऐसे हैं जिनके पास पट्टा तो है लेकिन जमीन पर उनका कब्जा नहीं है। कुछ ऐसे हैं जिनका जमीन पर तो कब्जा है, लेकिन उनके नाम पट्टा नहीं है। बहुत कम लोग ऐसे हैं जिनका भूमि दस्तावेज के आधार पर जमीन पर कब्जा है। हमें इस संबंध में एक सूची तैयार करनी चाहिए और जमीन की उपलब्धता के आधार पर बिना जमीन वाले लोगों को जमीन दिलाने की कोशिश करनी चाहिए। याद रहे कि परिवार की समृद्धि पर ही बच्चे की उचित देखभाल संभव है।
13. महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून के बन जाने के बाद से गाँवों में सरकारी रोजगार गारंटी योजनाएं चल रही हैं। यह योजना गरीब और भूमिहीन लोगों के लिए अत्यंत ही लाभप्रद है। इस योजना में साल में

कम से कम 100 दिन काम देने और काम न मिलने पर भत्ता देने का प्रावधान है। लेकिन वास्तव में इसकी गारंटी करने तथा अधिकारियों की उदासीनता और भ्रष्टाचार से बचने के लिए हमें इसकी पूरी प्रक्रिया से जुड़े रहकर काम करना होगा।

14. स्वावलंबन के अन्तिम उद्देश्य के बतौर जीवन के अधिकार से प्रेरित सक्रिय लोगों को लेकर समुदाय आधारित संगठन तैयार करना चाहिए ताकि वे स्वयं अपनी पहलकदमी से इन अधिकारों के अंतर्गत प्राप्त सुविधाओं का उपभोग कर सकें।

२. विकास का अधिकार

विकास के अधिकार के अंतर्गत मुख्य रूप से शिक्षा पर जोर दिया गया है। कार्यक्षेत्रों का अनुभव दिखाता है कि अशिक्षित जनसमुदाय अपने अधिकारों से भी परिचित नहीं हो पाता और वे अधिकार ऐसे हैं जो उसके विकास में सहायक होते हैं। अतः विकास के बारे में लोगों को उनके अधिकारों से परिचित कराते समय अपने इलाके में चल रही शिक्षा से संबंधित सभी गतिविधियों में हमें सक्रिय हस्तक्षेप करना चाहिए।

1. ग्रामीण इलाकों में इस समय कई प्रकार की शिक्षा गतिविधियां चलती हैं, जो कई प्रकार की संस्थाओं द्वारा संचालित होती है। इनमें सरकारी संस्थान, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र, धार्मिक समूहों द्वारा संचालित स्कूल, प्राइवेट स्कूल तथा आचार्य व सर्वशिक्षा अभियान के स्कूल हैं। हमें अपना कार्यभार पूरा करते हुए बाकी सभी शिक्षण गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिए और उचित हस्तक्षेप भी करना चाहिए, जैसे, नए सरकारी स्कूल खोलने की मांग करना, निस्क्रिय सरकारी स्कूलों को फिर से सक्रिय करने की मांग करना, उच्चतर स्कूलों की मांग करना, इत्यादि।
2. जहां क्रेश चल रहे हैं वहां शिक्षा प्रदान करने का प्रबंध भी होना चाहिए। बच्चों की देखभाल के वक्त उन्हें भविष्य के उन्नत नागरिक के रूप में विकास करने का लक्ष्य कभी भी हमारी आँखों से ओझल नहीं होना चाहिए। यह लक्ष्य उन्हें बिना शिक्षित किए पूरा नहीं किया जा सकता।
3. कामकाजी बच्चों और किशोर बच्चों को राष्ट्रीय अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के तहत शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।
4. हमें इस संबंध में काफी जागरूक रहना चाहिए कि सभी बच्चों को मुफ्त, अनिवार्य और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सके।
5. शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों के विकास के लिए उन्हें मेडिकल प्रमाणपत्र दिलवाना व चिकित्सकीय सुविधा प्रदान कराना तथा उन्हें अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करते हुए क्रमशः सरकारी स्कूलों की मुख्य धारा से जोड़ना हमारा कार्य है।
6. बच्चों के लिए स्कूलों में खेलकूद का प्रबंध कराना एवं खेल प्रतियोगिता आयोजित करवाना चाहिए ताकि उनका सर्वांगीण विकास किया जा सके।
7. ग्राम शिक्षा समिति और सी0बी0ओ0 को भी सक्रिय रहने पर ध्यान देना चाहिए।
8. सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए बाल/जन सूचना केन्द्रों की स्थापना करनी चाहिए।

३. सुरक्षा का अधिकार

सुरक्षा के अधिकार के अंतर्गत निम्नलिखित चीजें आती हैः

1. सबसे पहले बाल श्रमिकों की पहचान की जानी चाहिए और उनका गाँववार आंकड़ा तैयार करना चाहिए।
2. बाल श्रमिकों को व्यवसाय/कार्यस्थान से मुक्त कराकर उन्हें पुनर्स्थापित करना चाहिए।
3. मुक्त कराए गए बच्चों को जीवन की मुख्य धारा से जोड़ना चाहिए। अनौपचारिक शिक्षा के बाद उन्हें सरकारी स्कूलों की मुख्य धारा से जोड़ना चाहिए।
4. महिलाओं तथा बच्चों के उत्पीड़न तथा यौन शोषण के मामलों में तथ्यों का अन्वेषण करना चाहिए और अपनी जागरूकता को बरकरार रखना चाहिए।
5. शहरों की झुग्गी-झोपड़ियों को बाल श्रमिक मुक्त बनाना हमारा लक्ष्य होना चाहिए।
6. सूदखोरी का गरीब परिवारों पर बहुत बुरा असर होता है जो बच्चों के विकास और उनकी सुरक्षा को भी प्रभावित करता है। अतः, सूदखोरी से सुरक्षा के उपाय निकालने पर भी हमें ध्यान देना चाहिए।

४. भागीदारी का अधिकार

समाज से अलगाव महसूस करते बच्चों को सामाजिक क्रिया-कलापों से जोड़कर ही उन्हें मुख्य धारा में लाया जा सकता है। इसके लिए हमें खास तौर पर दो तरह का कार्य करना चाहिए जो निम्नलिखित है :

1. बच्चों के अधिकारों को लेकर कार्यशालाओं का आयोजन करना ताकि अपनी कुशलता को बढ़ाया जा सके और इस प्रकार हर स्तर में कार्य को उन्नत किया जा सके।
2. बच्चों के सामूहिक संगठनों का निर्माण करना चाहिए। बाल संसद अथवा बाल मंच जैसे संगठन बनाकर वहां उनके अधिकारों के बारे में उन्हें जागरूक करना चाहिए तथा बहसों, आदि के जरिए उनकी क्षमता का विकास करना चाहिए।

निस्संदेह, बाल अधिकारों को साकार करने के लिए बहुत अधिक मात्रा में संसाधनों की आवश्यकता है, किन्तु इस प्रयास में सफलता की कुंजी 'समुदाय का संकल्प' है। हमें उन्हें एकजुट करना होगा, वर्तमान कार्यक्रमों को सुदृढ़ करना होगा एवं उन्हें गति देनी होगी और कमी वाले क्षेत्रों में नए प्रयास करने होंगे, ताकि सभी बच्चे जीवन रक्षा, संरक्षण, वृद्धि एवं विकास के सपने सभी अधिकारों का आनंद ले सकें। उपस्थित चुनौतियों और हमारे संकल्प के बीच का संघर्ष ही अन्तिम परिणाम तक ले जाएगा।

संकलन–राजेश कश्यप

आओ जाने अपने स्कूल को

विद्यालय प्रबन्ध समिति (स्कूल मैनेजमेंट कमेटी)

संभवतः आप अवगत होंगे कि दशकों के लम्बे संघर्ष के बाद भारत में 6 से 14 वर्ष के प्रत्येक बच्चे को बुनियादी शिक्षा का मौलिक अधिकार प्राप्त हो गया है। यद्यपि भारत के संविधान में 86वें संशोधन के साथ ही (अनुच्छेद 21 ए) यह अधिकार सन् 2002 में ही मिल चुका था, मगर इसको कानून बनने और इसे लागू होने में 8 वर्षों का लम्बा समय लग गया। उत्तर प्रदेश में भी पिछले साल नियमावली बनने के बाद इस अधिनियम को लागू किया गया।

केन्द्र सरकार ने इस कानून को लागू करने की जिम्मेदारी राज्य सरकारों/ स्थानीय निकायों को सौंपी है। केन्द्र सरकार ने ''बच्चों की मुफ्त व अनिवार्य बुनियादी शिक्षा के लिए आदर्श नियम'' का मसौदा तैयार कर राज्यों को इसे लागू करने को कहा है। केन्द्र तथा केन्द्र शासित प्रदेशों में यह आदर्श नियम लागू हो चुके हैं। कई प्रदेशों में यह आदर्श नियम बन चुके हैं, जैसे मध्य प्रदेश, उड़ीसा आदि। अधिकतर राज्यों में इसे बनाने तथा लागू करने में कई तरह का राजनैतिक विरोध उभर कर सामने आया है। नतीजतन कई राज्यों में यह कानून अब भी अधर में लटका हुआ है।

इस कानून को लागू करने के सवाल पर शुरू में केन्द्र सरकार ने कहा था कि इसके लिए अगले पाँच वर्षों में 17.1 खरब रूपयों की आवश्यकता पड़ेगी और इतना धन खर्च करने में केन्द्र सरकार सक्षम नहीं है। अतः सरकार ने निजी क्षेत्र की भागीदारी द्वारा धन की कमी को पूरा करने की बात कही थी। ज्ञातव्य है कि बुनियादी शिक्षा के अप्रत्यक्ष रूप से निजी हाथों में सौंपने की इस सरकारी पहल- पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पी०पी०पी०) का देश भर में सामाजिक संगठनों, राजनैतिक पार्टियों, शिक्षा संगठनों तथा मीडिया ने पुरजोर विरोध किया। संतोषजनक परिणाम यह हुआ है कि भारत सरकार ने अपनी एक्सपेंडिचर फाइनेंस कमेटी (ई०एफ०सी०) कमेटी की संस्तुति पर 23.1 खरब रुपये बच्चों की मुफ्त व अनिवार्य बुनियादी शिक्षा के कानून को लागू करने पर स्वयं खर्च करने का निर्णय लिया। इस धन को भारत सरकार एक मुश्त देने वाली है। इस प्रकार शिक्षा पर खर्च होने वाले धन का 68 प्रतिशत केन्द्र सरकार वहन करेगी और 32 प्रतिशत राज्य सरकार। यह एक सुखद प्रगति है।

बच्चों के लिए मुफ्त व अनिवार्य शिक्षा कानून में क्या है?

- 6 से 14 आयु वर्ग के हर एक बच्चे को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा मिलेगी। यह अब उसका कानूनी हक है।
- कक्षा आठ तक किसी भी बच्चे से स्कूल दाखिले, वर्दी (यूनीफार्म) या अन्य किसी भी नाम पर कोई भी फीस या खर्च नहीं वसूला जाएगा।
- विद्यालय किसी भी बच्चे को कक्षा आठ तक न तो फेल कर सकता है और न ही निकाल सकता है।
- बच्चे के स्कूल में दाखिले के समय किसी भी तरह का कोई टेस्ट या प्रवेश परीक्षा नहीं ली जायेगी।
- निवास तथा जन्मतिथि प्रमाणपत्र आदि के अभाव में किसी भी बच्चे का स्कूल में दाखिला नहीं रोका जा सकता। अभिभावक द्वारा दिया गया शपथपत्र (एफिडेविट) ही इसके लिए काफी होगा।
- कक्षा 8 तक की शिक्षा में किसी भी प्रकार की बोर्ड परीक्षा नहीं होगी।
- स्कूल में किसी भी बच्चे को मारा–पीटा नहीं जाएगा।

राज्य सरकार/स्थानीय निकाय के कर्तव्य

- इस कानून को लागू कराने की पूरी जिम्मेदारी राज्य सरकारों/स्थानीय निकायों की होगी।
- 6 से 14 आयु वर्ग के सभी बच्चों का लेखा जोखा रखना।
- समय पर शिक्षण सामग्री, प्रशिक्षण तथा ढाँचागत व्यवस्थाएं सुनिश्चित करना।

विद्यालय/अध्यापक के उत्तरदायित्व

- सभी बच्चों को उनकी योग्यता एवं उम्र के अनुसार विद्यालय में प्रवेश देना।
- यदि किसी बच्चे का जन्मतिथि प्रमाणपत्र अथवा उसके अभिभावक का निवास प्रमाणपत्र नहीं है तब भी उसका दाखिला विद्यालय में सुनिश्चित हो। अभिभावक द्वारा दिया गया एफिडेविट ही इसके लिए काफी है।
- इस कानून द्वारा तय मानक के अनुसार विद्यालय में शिक्षण व्यवस्था सुनिश्चित करना।
- इस कानून के अनुसार अध्यापक को जनगणना, आपदा तथा लोकसभा विधानसभा एवं स्थानीय निकायों के चुनाव के अतिरिक्त अन्य किसी गैर शैक्षणिक कार्यों में नहीं लगाया जा सकता।
- हर विद्यालय में कक्षा 5 तक 30 बच्चों पर एक शिक्षक पर तथा 6 से 8 तक की कक्षा में 35 बच्चों पर एक शिक्षक का अनुपात सुनिश्चित करना।
- हर एक कक्षा के लिए कम से कम एक अध्यापक की व्यवस्था सुनिश्चित करना।

राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग

- यह आयोग बच्चों के लिए मुफ्त व अनिवार्य शिक्षा कानून 2009 के उल्लंघन के मामलों का निपटारा सुनिश्चित करेगा।
- बच्चों का स्कूल में दाखिला, शोषण तथा किसी भी प्रकार के अधिकार हनन एवं अध्यापकों के अधिकारों के हनन के निराकरण के लिए यह आयोग कार्य करेगा।
- यह आयोग बच्चों की शिक्षा के अधिकार को लागू कराने का कार्य करेगा।
- यह आयोग शिक्षा अधिकार से संबंधित किसी भी शिकायत का निपटारा करेगा।
- कक्षा 1 से लेकर कक्षा 8 तक बच्चों का स्कूल में दाखिला, उनके स्कूल में बने रहने की व्यवस्था तथा तय मानक के अनुसार विद्यालयों की व्यवस्था करेगा।
- विद्यालय में शिक्षण कार्यो पर निगरानी रखेगा।
- निजी विद्यालयों के मानक, उनकी मान्यता तथा अनुपालन पर निगरानी रखेगा।

राज्य शिक्षा सलाहकार परिषद का गठन

हर एक राज्य में राज्य शिक्षा सलाहकार परिषद का गठन किया जायेगा, जिसमें शिक्षा मंत्री सहित 14 सदस्य होगें। यह परिषद शिक्षा सम्बन्धी पाठ्यक्रम, शिक्षा सामग्री तथा प्रशिक्षण आदि विषयों पर मार्गदर्शन करेगी।

हमारी मांगें

- सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत अथवा सरकारी बजट का 20 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च किया जाय तथा उसमें से भी 50 प्रतिशत बुनियादी शिक्षा पर व्यय हो।
- बुनियादी शिक्षा की गुणवत्ता हेतु अप्रशिक्षित पैरा-शिक्षकों के स्थान पर प्रशिक्षित एवं पूर्णकालिक शिक्षकों की नियुक्ति हो।
- बुनियादी शिक्षा में किसी भी प्रकार के निजीकरण एवं व्यवसायीकरण का प्रयास न किया जाय।
- केन्द्र सरकार इस अधिनियम को लागू करने में होने वाले कुल व्यय का कम से कम 85 प्रतिशत भाग स्वयं वहन करे।
- शिक्षा अधिकार कानून के हनन के मामलों के निपटारे के लिए बने आयोग को न्यायिक अधिकार दिए जाएं।
- निजी एवं गैर सहायता प्राप्त विद्यालयों को भी इस कानून की परिधि में लाया जाए।

संकलन-राजेश कश्यप

हमारी रचनाएं

आओ जाने गिट्टी चोर

इस खेल को खेलने के लिए कम से कम 5 और अधिक से अधिक 15 बच्चे या अधिक भी खेल सकते हैं। चाहें लडकियाँ हों या लड़के कोई भी खेल सकता है। इस खेल में 1 चोर बनता है जो वास्तविक चोर न होकर अपनी गिट्टी की रखवारी करने के लिए और लोगों को छोड़ देता है। वह कुछ लेने जाता है और इतनी ही देर में उसकी गिट्टी चोरी हो जाती है।

इस खेल में सारे बच्चे गोला बनाकर खड़े होते हैं। एक, जो चोर बनता है वह गोले से बाहर होता है। 20-30 सेकेण्ड के बाद वापस गोले में आकर अन्य साथियों से पूछता है कि ''मेरी गिट्टी किसने चुराई'', दूसरा जवाब देता है ''हाथी ने''। चोर कहता है ''हाथी मेरे साथ गया''। अगले से चोर पूछता है कि ''मेरी गिट्टी किसने चुराई'', दूसरा कहता है,''बिल्ली ने''। चोर कहता है ''बिल्ली मेरे साथ गई''।

इस तरह चोर को 5 चांस मिलते है कि वो पहचाने कि उसकी गिट्टी गोले में खड़े किस साथी के पास है। अगर वह पहचान लेता है कि गिट्टी किसने चुराई है तो असली चोर भागने की कोशिश करता है लेकिन तब सभी साथियों की मद्द से असली चोर पकड़ा जाता है। और अपनी गिट्टी दूसरों की रखवारी में छोड़कर वह घेरे के बाहर चोर बनने जाता है। इस प्रकार बार-2 यह खेल खेलते रहते हैं।

आओ खेलें खो-खो खेल

इस खेल में दो टीमें बनाई जाती है। एक टीम में 4, 5 या अधिकतम 9 लोग रहते हैं। ज्यादातर यह खेल लड़कियां खेलती है। टास किया जाता है। टास में जो टीम जीतती है उसके लिए खेल में बाध्यताएं बहुत कम होती है। जो टीम टास्क हारती है उनमें से कोई एक साथी दूसरी टीम के लोगों को छूता है और एक ही दिशा में भागता है, जबकि दूसरी टीम के लोग अपने बचाव के लिए दोनों ओर घड़ी की दिशा में, घड़ी की विपरीत दिशा में भी भाग सकते हैं। लेकिन दोनों ओर लगे खम्भों के बाहर नहीं जाते है। टास्क हारी हुई टीम का जो व्यक्ति भाग रहा होता है, थक जाने की स्थिति में अपने अन्य साथियों में से जो बैठे होते हैं उनमें से किसी को भी 'खो' बोल सकता है जिसे खो बोला जाता है वह दूसरी टीम के लोगों को पकड़ने का काम करता है अर्थात् पहले वाले व्यक्ति की जिम्मेदारी निभाता है और पहले वाला व्यक्ति उसकी जगह पर बैठ जाता है। एक खास बात ये होती है कि जिस टीम के लोग बैठे होते हैं उन्हें बहुत एलर्ट रहना होता है। ताकि खो बोले जाने पर तुरन्त प्रक्रिया में शामिल हो। इन लोगों को दोनों ओर मुँह करके बैठाया जाता है, यानी एक व्यक्ति बायीं ओर, दूसरा दायीं ओर, तीसरा बायीं ओर, और चौथा दायीं ओर, इस तरह जितने साथी होते है बैठाये जाते हैं। ताकि खो बोले जाने पर व दूसरी टीम के लोगों के दोनों ओर भागने पर उन्हें जल्द पकड़ा जा सके। जब एक टीम, दूसरी टीम के सभी साथियों को छू लेती है। तब दूसरी टीम के सदस्य बैठते है और पहले वाली प्रक्रिया चलती है।

मेरे दोस्त

हम अपने दोस्तों के साथ रोज पढ़ने जाते है। हमारे दोस्त हमें रोज सुबह पढ़ने के लिए बुलाने आते हैं। हमारे दोस्त बहुत अच्छे हैं। हमारे दोस्त कुछ भी काम करते हैं, सब मिलजुल कर करते है। हमारे दोस्त हमें अपने पास बिठाते है। हमारे दोस्त और हम शाम को साथ-2 टहलने जाते हैं। हम और हमारे दोस्त सुबह 8 बजे कोचिंग जाते हैं और उसके बाद हम लोग स्कूल जाते हैं।

हमारे दोस्त छुट्टी होने के बाद हमारे साथ कोचिंग शाम को 4 बजे जाते है और वहाँ से छुट्टी के बाद हम और हमारे दोस्त साथ-साथ घर को आते है और शाम को हम और हमारे दोस्त साथ-2 पढ़ते हैं। उसके बाद सो जाते है।
हमारे दोस्त कोई भी चीज लेते है। तो हमें भी देते है। हमारे दोस्त हमें बहुत मानते है। हमारे दोस्त 2 है। हमारे दोस्त और हम तम्बाकू नहीं खाते है। हमारे दोस्त गाली नहीं देते है।

धर्मेन्द्र कुमार भार्गव
ग्राम- रानीबेहड़

मेरी अपेक्षाएं

मित्रों तथा सहपाठियों के साथ :

मित्रों के साथ - मित्रों से मेरी अपेक्षा ये है कि वो मेरे साथ खेले और खेल में लड़ाई न करें और जीत हो या हार उनके व्यवहार में परिवर्तन न आए। मेरी अपेक्षाए ये है कि वो समय-समय पर मिलने आए। मित्रों के साथ जब मैं खेलूं तो वे मेरे खिलौने तोड़े नहीं। मैं अपने मित्रों से यही अपेक्षाएं रखता हूँ।

सहपाठियों के साथ - सहपाठियों के साथ मेरी अपेक्षाएं ये है कि वो मेरा सामान न चुराएँ और मैं ये चाहता हूँ कि जिस दिन मैं स्कूल न जा पाऊँ तो वह अपनी कॉपी मुझे काम पूरा करने के लिए दें और वह मुझसे लड़ाई न करें और मेरे मित्र मेरे घर आए। मैं अपने सहपाठियों से यही अपेक्षाएं रखता हूँ।

स्कूल के साथ - स्कूल के साथ मेरी अपेक्षाएं ये है कि वहां का पर्यावरण साफ-सुथरा हो, और अच्छी पढ़ाई हो, खेलने का बड़ा का मैदान हो, और मेरे स्कूल वाले हमें पिकनिक मनाने ले जाया करें और स्कूल में विज्ञान की प्रदर्शनी लगे। मैं अपने स्कूल से यही अपेक्षाएं रखता हूँ।

टीचरों के साथ - टीचरों के साथ मेरी अपेक्षाएं यह है कि वे हमें कम गृह कार्य दें और हमें मारे न और हम लोगों को खेल खिलाया करें अगर हम कभी कॉपी और किताब ले जाना भूल जाएं तो हमें मारे नहीं और जब मैं उनसे कॉपी चेक कराने जाऊँ तो वो मेरी कॉपी चेक कर दे ये न कहे की अभी हम कॉपी चेक नहीं करेंगे। हम लोगों को अच्छी तरह से कोई बात को समझाएँ। मैं अपने टीचर से यही अपेक्षाएं रखता हूँ।

माता पिता से अपेक्षाएं

मुझे अपने माता पिता से ये अपक्षाएं हैं कि वो मेरे द्वारा कही जाने वाली बातों को समझें उसके बाद ही अपना निर्णय मुझ पर लागू करें। कभी-कभी माता पिता हमारी पूरी बात नहीं सुनते हैं और अपनी बात शुरू कर देते हैं। अगर कोई बात समझ में नहीं आती है तो उसे अच्छी तरह से समझा कर बताएं। वैसे तो मेरे मम्मी-पापा मेरा बहुत ख्याल रखते हैं किंतु मैं कभी-कभी किसी खिलौने या किसी अन्य वस्तु की जिद करता हूँ तो मुझे मना कर देते हैं तो मुझे बुरा लगता है। और मै उनके कहने के अनुसार ही बात को मान जाता हूॅं। मेरे माता पिता से ये अपेक्षा है की वो एक नया घर खरीदें और उसमें मेरे लिए पढ़ने वाला एक अलग कमरा हो और जिसे मै अपने ढंग से सजाऊॅ मुझे पहाडों पर घूमने का बहुत शौक है। मैने पापा से कहा की मुझे इस गर्मी की छुट्‌टी में घुमाने ले चलिए लेकिन वो मुझे इस गर्मी की छुट्‌टी में कहीं घुमाने नहीं ले गए।

मैं जीवन में क्या करना चाहता हूँ

अभी तो मैं छोटा हूँ इसलिए ज्यादा समझ में नहीं आता है कि मुझे बड़ा होकर क्या बनना चाहिए लेकिन जब किसी पुलिस अफसर को देखता हूॅं की वो अच्छी सी ड्रेस पहने हुए है और रिवाल्वर लगाए हुए है तथा उसके साथ कई पुलिस की गाडियॅा चल रही हैं तो मेरा मन कहता है की मुझे बड़ा होकर पुलिस अफसर बनना है। और जब मैं टी .वी. पर क्रिकेट मैच मे खिलाडियों को खेलते हुए देखता हॅू तो मन करता है की मैं क्रिकेटर बन जाऊॅ जिससे पूरी दुनियां के लोग मुझे जान जाएं अभी तो मेरा घर बहुत छोटा है। लेकिन जब मै बड़ा होकर अमीर आदमी बन जाऊॅगा तो एक घर खरीदूॅंगा जिसमे मेरा परिवार आराम से रहे। मै ये भी चाहता हॅू कि मै बड़ा होकर गरीब तथा विकलांग बच्चों की मदद करूं। जिससे उन्हे भीख न मांगनी पड़े।

आशुतोष राज
कक्षा-8
(आशुतोष राज लखनऊ में रहते है जो पिछले दो सालों से रोजी-रोटी बालमंच लखीमपुर के सदस्य है)

कविता

मैं भारत की नारी हूँ नारी नहीं चिंगारी हूँ
दुश्मन के लिए कटारी हूँ प्रियतम के लिए मैं प्यारी हूँ
मैं भारत की नारी हूँ नारी नहीं चिंगारी हूँ
गौरी हूँ लक्ष्मी दुर्गा से सीख सिखी हूँ
साहस की अवतारी हूँ देश की मैं रख
वाली हूँ साहस की अवतारी हूँ
देश की मैं रखवाली हूँ
मैं भारत की नारी हूँ नारी नहीं चिंगारी हूँ
साहस से ना हारी हूँ देश की बलिहारी हूँ -

अनीता देवी
ग्राम- रानीबेहड़

मेरी अपेक्षाएं : ग्राम प्रधान से

मेरी अपेक्षा है कि ग्राम प्रधान मेरे ग्राम पंचायत के अन्दर अच्छी सी०सी० रोड बनाएं और चारों तरफ अच्छा रास्ता बना हो एवं मेरे ग्राम पंचायत के अन्दर 24 घंटे बिजली हो। मेरे ग्राम प्रधान अच्छे हो जोकि समस्त ग्राम सदस्यों की सेवा का अवसर प्रदान करें और मुझे सरकार से जुड़ी बातों की जानकारी मिले। मैं पढ़-लिखकर अच्छी डाक्टर बनकर मरीजों के लिए अच्छी सेवा एवं सुविधाये प्रदान कराने के लिए अवसर प्रदान करूँ।

अनीता देवी
ग्राम- रानीबेहड़

मेरे विचार

1. मेरा नाम खुशबू श्रीवास्तव शिक्षा के माध्यम से मैं अच्छी पढ़ाई करूँगी और आगे पढ़कर अच्छी नौकरी करूंगी।
2. बिजली, नाली, खड़जा, सहायता लेना माता पिता से प्यार दोस्तों से मोहब्बत और दोस्ती करना चाहिए।
3. मैं जब बड़ी होऊँगी तब मैं गाँव का पूरा विकास करूंगी ताकि हमारा नाम रोशन हो।
4. जब मैं बड़ी हो जाऊंगी तब हर एक को सही रास्ता बताऊंगी।

खुशबू श्रीवास्तव
ग्राम- रानीबेहड़

मुझे बनना है डॉक्टर

मेरा नाम अवधेश कुमार है पिता का नाम बाँके लाल है मेरी उम्र 10 वर्ष है। मैं ग्राम- कस्ता, ग्राम पंचायत कस्ता का रहने वाला हूँ। मैं कक्षा-5 में पढ़ता हूँ। मैं बड़े होकर डाक्टर बनना चाहता हूँ। मैं स्कूल में आने के बाद घर पर 5 बजे से 8 बजे तक पढ़ता हूँ। मुझे अंग्रेजी पढ़ने में बहुत मन लगता है। 20 मई से हमारे स्कूलों की छुट्टी हो गयी है। अब मैं अपने घर का काम करता हूँ। लेकिन जून के महीने में बुआ के घर जाऊँगा और वहाँ पर बच्चों के साथ छुट्टी मनाऊँगा लेकिन साथ में पढ़ाई भी करता रहूँगा। हमारे घर पर एक बहन व 5 भाई है मेरी मम्मी का नाम फूलमती है।

अवधेश कुमार
ग्राम- कस्ता

मेरी शिक्षा

पिछले साल हमने प्राइवेट स्कूल में पड़ना शुरू किया था। तब हमको हिन्दी लिखना व अंग्रेजी लिखना नहीं आता था। हमारे माता पिता ने हमारी पढ़ाई देखकर बहुत परेशान हुये तो पिता व माता ने हमारा नाम दूसरे स्कूल में लिखवा दिया। हमने उस स्कूल में हिन्दी अंग्रेजी लिखना और पढ़ना सीखा और साफ सफाई करना भी सीखा।

नवनीत कुमार
ग्राम- कस्ता

मेरी कहानी

माँ ने हिम्मत दिखाया -

कविता देवी पिता का नाम छोटे लाल उम्र 11 वर्ष जाति मल्लाह। जब मैं घर पर पैदा हुई थी तो लोगों कों दुःख हुआ था, हमारी मम्मी को दादी ने खाने को नहीं दिया था और न ही किसी ने मुझे देखा था लेकिन मम्मी मेरी मुझको बहुत चाहती है और प्यार करती है। जब हमारा भाई हुआ तो घर पर बहुत सी खुशियां मनाई गयी। उसके बाद जब मैं स्कूल जाने वाली हुई तो हमारा नाम स्कूल में नहीं लिखवाया गया लेकिन मम्मी ने बाबा, पापा तथा चाचा से लड़ाई की और हमारा नाम स्कूल में लिखवाया इस समय मैं कक्षा-5 में पढ़ती हूँ हमारे साथ हमारा भाई भी जाता है। मैं बहुत खुश हूँ। मैं डॉक्टर बनना चाहती हूँ लेकिन मम्मी पापा अनपढ़ है।

कविता देवी

मुझे बनना है : सेना नायक

मैं रोज़ी-रोटी संगठन का एक सदस्य हूँ मेरे सपने तो एक बुलन्दी को छूने के हैं। मुझे दोस्तों के साथ रहना बहुत अच्छा लगता है और मैं जो भी काम करता हूँ सोच समझ कर करता हूँ। मुझमें हर वक्त यही लगन लगी रहती है कि मैं अच्छे से अच्छे कार्य करूँ। हम और हमारे दोस्तो को बहुत मजा आता है इन छुट्टियों में एक से एक खेल खेलते है लूक्का-छिप्पी, गुल्ली-डण्डा, क्रिकेट आदि खेल खेलते है। मुझे पढ़ना बहुत अच्छा लगता है सुबह उठता हूँ फिर पढ़ता हूँ और फिर खेलने जाता हूँ और मैं ऐसे खेल खेलता हूँ कि उससे मुझे कुछ ज्ञान बढ़ता है जब मैं खेल खेलता हूँ तो मुझमें हर एक खेल खेलने की इच्छाये उठने लगती है हम मन से खेल खेलते है और स्वस्थ्य रहते है मेरे मन में ऐसी जागरूकता उठती है। मेरी सबसे बड़ी इच्छा यह है कि मैं देश की सेवा करू। मैं एक सेना नायक बनना चाहता हूँ। मैं माता पिता और गुरूजन के आर्शीवाद से देश की सेवा करना चाहता हूँ यही मेरी इच्छा है। रोज़ी-रोटी संगठन से सम्मिलित हूँ।

जयेन्द्र सिंह
कक्षा-8
ग्राम- रानीबेहड़

मेरी अपेक्षाएं : ग्राम प्रधान से

मेरा नाम विनीत कुमार है मैं ग्राम भदहा, ग्राम पंचायत मितौली, ब्लाक मितौली, जनपद लखीमपुर-खीरी का रहने वाला हूँ। हमारे गाँव के प्रधान का नाम दिनेश कुमार जी है। उनसे हम लोग कहते है कि हमारे गाँव में सबसे पहले बच्चे के लिए स्कूल होना चाहिए तथा बच्चों के लिए खेलने की जगह होनी चाहिए हमारे गाँव में गरीब लोगों को आवास, पेंशन, राशन, आँगनबाड़ी केन्द्र, इण्डिया मार्का हैण्ड पम्प होना अनिवार्य है। साथ में सड़क, खड़ंजा, नाली आदि होना चाहिए तथा गाँव के लोगों को प्रधान जी का सम्मान करना चाहिए।

विनीत कुमार
ग्राम- भदहा।

मेरी ख्वाहिश

मेरा नाम अभिषेक कुमार है मैं कक्षा-5 की परीक्षा दे चुका हूँ मेरी ख्वाहिस है कि मैं बी०एड० तक पढ़ाई करूं। बी०एड० पास होने के बाद मैं मास्टर बन सकूं। जिससे मैं बच्चों को शिक्षा दे सकूँ, जिससे मेरा देश आगे बढ़ता जाए। जब मैं बच्चों को शिक्षित करूँगा तो बच्चों का विकास होगा। जैसे मैं पढ़ा हूँ वैसे ही बच्चे पढ़ते जाएँ और उन सब लोगों का विकास होता चला जाएगा। बच्चों को शिक्षा देना बहुत ही अच्छा व आवश्यक होता है बच्चों को शिक्षा देने से बच्चों का ज्ञान बढ़ता है।

अभिषेक कुमार गौतम
ग्राम- तेंदुआ

मेरा सपना व अपेक्षाएं

हमारे सपने - मैं पढ़-लिख कर इंजीनियर बनना चाहता हूँ। हमारी इच्छा यह है कि जब मैं इंजीनियर बनूँगा तब घर-घर में विद्युत लाइट का प्रबन्ध करेंगे।

बड़े होकर हम क्या बनेगे?
बड़े होकर हम इंजीनियर बनेंगे।

हमसे लोग बातचीत कैसे करें?
हमें दूसरों का आदर करना चाहिए हमें सही बोलना चाहिए ताकि लोग हमसे अच्छी बातें करें।

पिछले दिनों हमने क्या सीखा और क्या पढ़ा?
पिछले दिनों हमने पढ़ाई की थी। हिन्दी, अंग्रेजी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विषय, कला आदि विषयों में खूब पढ़ाई की थी। हमें दौड़ना, कबड्डी, मैच, फुटबॉल पसन्द है।

गर्मी की छुट्टियां

गर्मी के छुट्टियों में नानी के घर जाऊंगा वहां तो आम, जंगल जलेबी खूब तोड़ के खाऊंगा। जब जुलाई आयेगी फिर से आगे का क्लास पढ़ने जाऊंगा। यह हमारी दोस्त क्लासफेलो से निवेदन है कि हर छुट्टियों में देश विदेश घूम करके और नानी या मौसी के घर रहकर के सब बच्चों से अपना हाल सुने और सुनाएं।

रूस्तम कुमार
ग्राम- रानीबेहड़

मेरा सपना

मेरे प्रधान वीरेन्द्र पाण्डेय है तथा मैनहन में रहते है। मेरे माता पिता का नाम श्री नेतराम तथा श्रीमती गीता देवी है। मेरे माता-पिता मुझे बहुत प्यार करते है तथा मेरे दोस्त मुझसे बहुत प्यार करते है। मेरे दोस्तों का नाम विद्यासागर, नरेन्द्र कुमार है मेरे सपने में देश की सेवा तथा अपने ग्राम की सहायता करना है। बड़े होकर मैं डॉक्टर बनना चाहता हूँ। हमसे लोग बात तब करेगे जब हम उनसे प्रेमपूर्वक बोलेंगे। पिछले दिन हमने हिन्दी, अंग्रेजी, गणित तथा अन्य विषय सीखे है तथा अन्य शहीदों के बारे में पढ़ा है जैसे सुभाष चन्द्र बोस, गाँधी जी, भगत सिंह अन्य शहीदों के बारे में जाना है।

अशोक कुमार
कक्षा-8

मैंने जो सीखा...

मैं गाँव में रहती हूँ। गाँव देहात में रहकर घर में काम आने वाली तथा पहनावे सम्बन्धी रख रखाव के बारे में सीखी हूँ। जैसे सिलाई करना इसमें क्या सामग्री की अवश्याकता होती है तथा पहनावे में ब्लाउज पेटीकोट बनाना कागज काट कर कटिंग एवं जोड़ने का काम सीखी और सामग्री रखने हेतु डलिया बनाना, टोकरी बनाना तथा नई तकनीक मोबाइल चलाना सीखी हूँ। हमने हिन्दी, अंग्रेजी और शब्द विलोम पढ़ना सीखा है।

सीमा देवा
कक्षा- 8
ग्राम- कचियानी

मेरा सपना

मेरा नाम अन्जू है। मैं कक्षा-7 में पढ़ती हूँ मेरे स्कूल का नाम भारतीय विद्या मन्दिर है। मेरे गाँव का नाम तेन्दुआ है। मेरी मम्मी मुझे पढ़ाना चाहती है; मेरी मम्मी मुझे बहुत प्यार करती है जो मैं कहती हूँ वही मुझे लाकर देती है। मेरे पाता जी मुझे बहुत प्यार करते है मुझे हर रोज स्कूल भेजने जाते है। मेरी मम्मी मुझे खाना पकाकर देती है, हमारा सपना यह है कि मैं शिक्षिका बनूं जिससे मैं और छात्र-छात्राओं को पढ़ा सकूँ। यही मेरा सपना है।

अन्जू
ग्राम- तेन्दुआ

मेरी बात

यदि हम वैद्य होते तो कफ और पित्त के सहवर्ती बात की व्याख्या करते तथा भूगोलवेन्ता होते तो किसी देश के जल बात का वर्णन करते किन्तु दोनों विषयों में से हमें एक बात कहने का भी प्रयोजन नहीं है। हम तो केवल उसी बात के ऊपर दो चार बातें लिखते है जो हमारे तुम्हारे सम्भाषण के समय सुख से निकल के परस्पर एक दूसरे के भाव को प्रकाशित करती है। सच पूछियें तो इस बात की भी क्या ही बात है जिसके प्रभाव से मानव जाति समस्त जीवधारियों की शिरोमणि अशरफ-उल-मखलूकात कहलाती है। गर्मियों की छुट्टियों में नानी या मौसी के घर जाऊँगी खूब आम और जामुन खाऊँगी और जब आयेगी जुलाई तो स्कूल जाकर अपने सहेली से सब कुछ सुनाऊँगी और सुनूंगी। सब बच्चों से अपना हाल सुनूँगी और सुनाऊँगी।

दिव्या भारती
ग्राम- रानीबेहड़

शिक्षा का महत्व

मैं कक्षा एक से लेकर आठ तक पढ़ी मेरा मन पढ़ाई में बहुत ज्यादा लगा जब मैं कक्षा-9 में आयी तो उस समय मेरी दीदी का देहान्त हो गया। इस लिए मेरा मन पढ़ने में नहीं लग रहा था। मेरी मम्मी-पापा कहते है। बेटी पढ़ लो। मेरा मन पढ़ने में नहीं लग रहा था। कक्षा-9 की परीक्षा नजदीक आ गई थी।

परीक्षा का महत्व - इतिहास परीक्षा थी उस दिन चिन्ता से हृदय धड़कता था। बुरे शकुन घर से चलते और दाँया नेत्र फड़कता था। जितना घर में याद किया उसमें से आधा याद हुआ उसमें कुछ स्कूल तरफ आते-2 साफ हुआ। यह सौ नम्बर का परचा था। मुझकों दो की भी आस नहीं चाहे दुनिया पलटे सारी मैं हो सकती थी पास नहीं फिर हाथ जोड़ कर बैठ गई सोचा भगवान दया कर वो मेरे दिमाग में इन प्रश्नों के उत्तर ठूंस-2 भर दो मेरे अन्दर के द्वार खुले कापी पर चली कलम चंचल जैसी धरती की छाती पर चलता हो हलवाहे का हल। लिख दिया हाल पानीपत का युद्ध हुआ था

सावन में जर्मनी और जापान युद्ध बीच हुआ गुप्त वंश में राज्य किया रजिया बेगम ने दिल्ली पर। फिर इस प्रकार के भावों से छूटे कितने ही फव्वारे जो प्रश्न नहीं था याद मुझे वे भी कापी पर लिख मारे।

रूवी देवी
कक्षा-9
ग्राम- रानीबेहड़

बड़ा ही महत्व है

व्यापार में घाटे का चूड़ियों में आटे का, मार-मार में चाटे का बड़ा ही महत्व है।
दफ्तर में मेज का नौकरी में ऐज, नाटक में स्टेज का बड़ा की महत्व है।
धनुष में वाण, पूजा में ध्यान का, साधु में ज्ञान का बड़ा ही महत्व है।
तीर्थ में पण्डे का, लड़ाई में डण्डे का, छुट्टियों में सण्डे का बड़ा ही महत्व है।
जाड़ों में ऊन का, आदमी में खून का, दाल में लोन का बड़ा ही महत्व है।
जरूरत में काम का, आदमी में नाम का, रास्ते में आराम का, भोजन में राम का बड़ा ही महत्व है।

कविता

नौजवान जाग रे-नौजवान जाग रे
दुश्मनों को देश की जमीन से निकाल दो
राष्ट का विजय निशान व्योम में उछाल दो
नौजवान जाग रे-नौजवान जाग रे।

शत्रु की चुनौतियाँ, रोज तो न आयेगी
नाजनीस घटियाँ रोज कब बुलायेगी
खौफनाम बदलियाँ रोज तो न छायेगी
देश के शरीर में नवीन रक्त डाल दो
नौजवान जाग रे-नौजवान जाग रे

युद्ध में पछाड़ दो चीन, पाकिस्तान को
मार कर खदेड़ दो तोप के शैतान को
मुक्त करो साथियों देश के विज्ञान को
देश के शरीर में नवीन प्राण डाल दो
नौजवान जाग रे-नौजवान जाग रे

रीता देवी
कक्षा-11
ग्राम- रानीबेहड़

मेरा दोस्त

मेरा नाम कुनाल है और मैं कक्षा- 7 में पढ़ता हूँ। मेरा स्कूल का नाम एकेडमिक स्कूल है और मेरे गाँव का नाम तेन्दुआ है। मेरे दोस्तों का नाम आकाश व दीप है मेरे दोस्त बहुत अच्छे है और वो मुझे हर चीज देते है। वह मेरे साथ खेलता है मेरे साथ स्कूल में भोजन भी करते हैं। हम साथ पढ़ते है और हम स्कूल की छुट्टी में साथ घर आते है और हम साथ गेंद खेलते है और हम उन्हें पेन देते हैं और वे हमे पेन देते हैं।

कुनाल
ग्राम- तेन्दुआ

हमारे सपने

हमारे सपने ऐसे हो की रोज सुबह उठ कर पढ़ने जाँऊ स्कूल के बाद घर पर पढ़ू और पढ़ लिख कर एक अच्छा इन्सान बँनू। अच्छे लोगों के सामने अच्छी बातें करूं। बोलना-बतलाना, बात-चीत करना। प्रधानी में खड़े होने से लोगों से बेहतर बात करना अच्छी-2 बाते बोलना जब प्रधानी प्राप्त हो जाएगी गरीब की सेवा एवं समाज की सेवा करूंगा। गरीबों का राशन कार्ड बनाऊँ, गाँव में नल लगवाऊँगा, गाँव में नाली बनवाऊँगा, गाँव में विधवा पेंसन बनवाऊँगा, विकलांग को प्रमाण पत्र बनवाऊँगा, हर स्कूल में वजीफा बटवाऊँगा, स्कूल में खाना बनवाऊँगा, बच्चों को ड्रेस बनवाऊँगा, हमारे सपने यही हैं।

कुलदीप कुमार
कक्षा-8
ग्राम- कचियानी

सरकार से अपेक्षा

मेरी सरकार समुदाय के लिए बिना भेदभाव किये बिना सामूहिक सामाजिक कार्य करे समाज के लिए हितकारी बने बालक-बालिका तथा महिला-पुरूष, गरीब-अमीर का भेद भाव न करके बराबरी का काम करें। सरकार स्वयं योजना का ठीक संचालन करें। जिससे योजना का लाभ कमजोर लोगों तक आसानी से पहुँच सके। योजना के काम में बी०पी०एल० सूची का नियम न रख कर सार्वजनिक रखा जाय। योजना वितरण में जातीय भेद भाव न करके एक बराबरी का समान अवसर प्रदान करने का नियम रखे। चलाई गयी योजनाओं को बन्द न किया जाय। नयी सरकार बने तो समाज के साथ राय मिला कर बदलाव करें या नया जोड़े। बनाये गये काम को काटने का प्रयास न करके। नया संशोधन करें। जो भी कार्य करें समाज के हित का काम करें।

शिवमंगल राज
कक्षा-9
ग्राम- रौना

मेरी अपेक्षाएं

हमारे सपने - हमारा सपना यह है कि हम पढ़कर एक डॉक्टर बनें ताकि हम गरीबों, दीन, दुखियों का अच्छी तरह से इलाज करें और अच्छा खेल खेले, अच्छा खाए-पिये, अच्छी तरह से अपना जीवन व्यतीत करें हम अपना सपना लेकर अच्छी तरह से लिखेगे-पढ़ेगे और ध्यान से सुनेगे। किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करेगे।

हमसे लोग बातचीत कैसे करें - हमसे लोग मधुर वाणी में बात करें और मीठे वचन बोले और कड़ुए वचन कभी न बोले, कड़ुए वचन बोलने से लड़ाई-झगड़ा तैयार हो सकता है। इसीलिए सबको प्रेम से बोलना चाहिए और अच्छी तरह से बात करनी चाहिए। मीठे वचन बोलने से मन को शान्ती मिलती है और दिल खुश हो जाता है। इसलिए हमसे लोग बातचीत अच्छी वाणी में करें और हँसी खुशी से करें।

मेरी अपेक्षायें (ग्राम प्रधान से, माता-पिता से, दोस्तों से) - मेरी अपेक्षा ग्राम प्रधान से यह है कि ग्राम प्रधान को हमारे ग्राम सभा की कालोनी, हैण्ड पम्पों, सड़क, लाइट, लाने का बन्दोबस्त करना है। ग्राम प्रधान गाँव में लड़ाई-झगड़ा को निपटाने में सहायता करें।

मेरे माता-पिता मुझे पढ़ते-लिखते देखकर बहुत खुश हो जाते हैं। मेरी माता मुझे तैयार करके स्कूल टाइम से भेजती है मेरे पिता मुझे बहुत प्यार करते है और वह हमें और मम्मी भइया को छुट्टियों में हरिद्वार या पूर्णागिरि माँ के दर्शन

करवाने ले जाते है और हम छुट्टियों का खूब मौज-मस्ती उड़ाते है और हँस-खुसी के साथ अपने रिश्तेदारी में मजा उड़ाते है। हमें छुटिटयों में अधिक मजा आता है हमें छुट्टियाँ बहुत पसन्द हैं।

हम अपने दोस्तों के साथ छुट्टियों में बहुत आनन्द लेते हैं। हमारे दोस्त या सहेली हमारी कठिनाई में साथ देते है और हर वक्त वह हमारे साथ रहते है हमारी सहेलियाँ हमारे साथ स्कूल रोज़ जाती है। और हमें अपनी सहेलियों के साथ रहती हूँ।

पिछले दिनों हमने क्या सीखा और क्या पढ़ा - पिछलें दिनों हमने खूब मन से पढ़ाई की और हिन्दी, अंग्रेजी, गणित इन विषयों में हमने काफी रूचि ली। पिछले दिनों पढ़ाई में काफी आनन्द लिया और परीक्षा में काफी मेहनत की अच्छा रिजल्ट आने का इन्तजार है। पिछले दिनों में खेल-कूद में, जैसे रस्सी कूदना, खो खेलना आदि इन खेलों में काफी रूचि ली अब इन दिनों छुट्टी का आनन्द ले रहें हैं।

संध्या देवी
ग्राम- रानीबेहड़

मेले का वर्णन कहानी

हमारे गाँव में कई वर्षो से मेला होता है। मेले में यज्ञ होता है। यज्ञ में दूर-दूर से वक्ता आते है। मेले में बहुत दूर-दरू से दुकानें आती है। मेले में दूर-दूर से मनुष्य आते है जिससे प्रत्येक मेले में खूब भीड़ एकत्र हो जाती है मेले के मुख्य द्वार से पहले ही काफी दूर तक भीड़ होती है सड़क पर भी अनेक प्रकार की दुकाने सजी होती है। मेले के माध्यम से एक-दूसरे से मधुर संबंध बने रहते है। छोटे-छोटे बच्चे इधर-उधर आ रहे है कोई खिलौना खरीद रहा है, दोनों ओर दुकानें सजी हुई है व्यक्ति इन दुकानों पर सामान खरीद रहे है दोनों ओर इन दुकानों में खिलौना वाले, चूड़ी वाले, कपड़े वाले अपनी-अपनी दुकानें सजाकर बैठे हुए है हमारे देश में मेलों का बहुत महत्व है मेरा अमीर-गरीब सभी व्यक्ति आसानी से देख लेते है।

कामिनी वर्मा
कक्षा-7

कविता

बन्दर माता पहन पजामा
चले देखने मेला
मेले में थे लगे हुए
चाट, पकौड़ी, केला
बन्दर की जेब में थे दस पैसे
दस पैसे की ले ली रेल
हुक हुक करती चलती रेल
कितना सुन्दर है यह खेल

अंशू देवी
कक्षा- 1
ग्राम- गनेशपुर

कृष्ण गीत

देखो-2 गरीबी का हाल कृष्ण के दर पे लेकर
आया हूँ विश्वास यही सोचकर आज आया हूँ।
अरे द्वार पालों कन्हैया से कह दो कि दर पे सुदामा करीब आ गया।
न सर पे है पगड़ी न तन पे है जामा बता दो कन्हैया को नाम है सुदामा।।
एक बार मोहन से जाकर कह दो कि दर पे सुदामा गरीब आ गया है।
भटकते-भटकते न जाने कहाँ से तुम्हारे मोहल्ले के गरीब आ गया।
सुनते ही दौड़े चले आ रहे है मोहन लगया गले से सुदामा को मोहन।
हुआ रूकमड़ी को बहुत ही अचम्भव ये मेहमान कैसे अजीब मेहमान आ गया है।
अरे द्वार वालो कन्हैया से कहते की दर से सुदामा गरीब आ गया।

निधी देवी राज
ग्राम-रामपुर

छिपा हुआ खजाना

एक किसान था वह गरीब था उसका एक बेटा और एक बेटी थी। उसके पास खेत कम नहीं थे, लेकिन वह आलसी था। मन लगाकर खेती-बारी नही करता था। वह परिश्रम से घबराता था। इसी कारण उसके खेत में भरपूर अन्न नहीं पैदा होता था। उसके परिवार को भर पेट भोजन नहीं मिल पाता था, वे दुखी रहा करते थे।

गाँव के पास एक महात्मा रहते थे, वे लोगों का दुख दर्द सुनते और उन्हें दूर करने का उपाय सुझाते थे। समय-समय पर वे गरीबों की सहायता भी करते थे। किसान भी अपना दुख दूर करने के लिए महात्मा की पास गया उस समय महात्मा जी अपने आश्रम के खेत में फावड़े से खुदाई कर रहे थे। वे पसीने से तर थे। किसान खड़ा होकर उन्हें देखता रहा उनका ध्यान में रखा था। महात्मा-बोले अच्छा दो अपना दाहिना हाथ दे दो इसके लिये बीस हजार दूँगा। किसान ने कहा- हाथ कटाने के बाद मैं लूला हो जाऊँगा मेरा काम कैसे चलेगा। अच्छा तो पैर ही दे दो मैं तुम्हें कीमत उतनी ही दूँगा। किसान ने कहाँ मैं लंगड़ा होकर अपना जीवन कैसे बिताऊँगा मुझे अपने अंगो को बेचकर रूपया नहीं चाहिए। मैं गरीब ही रहूँगा महात्मा बोले- बेटा तुम्हारे पास दो आँखे है दो-दो हाथ पैर है, मन-बुद्धि सब कुछ है। अपने अंगों की शक्ति को पहचानों इस मूल्यवान शरीर से शक्ति के अनुसार काम करो जीवन में कभी दुख नहीं होगे।

महात्मा जी की बात सुनकर किसान प्रसन्न हो गया। वह उनके चरणों में सिर झुका कर बोला महाराज जैसा सुना था वैसा ही पाया। आज आपने मेरा छिपा हुआ खजाना बता दिया। किसान खुशी-खुशी घर लौट आया वह अपनी खेती-बाारी में जुट गया उसका आलस्य जाता रहा। दिन-रात परिश्रम करने से उसकी खेती लहलहा उठी घर में खुशहाली छा गयी।

निधी देवी
ग्राम-रायपुर

कविता

अम्मा जरा देख तो ऊपर, चले आ रहे है बादल
गरज रहे है, बरस रहे है, दिख रहा है जल ही जल
हवा चल रही क्या पुरवाई झूम रही डाली-डाली
ऊपर काली घटा घिरी है नीचे फैली हरियाली
भीग रहे खेत बागवन भीग रहा है घर-आँगन
बहार निकलू मैं भी भीगूँ चाह रहा है मेरा मन।

नीरज कुमार
ग्राम-खुटेहना

एक कहानी

यह जगतपुर गाँव है। गाँव में जगह-जगह कीचड़ और गन्दगी थी बच्चे खेलना चाहते थे। पर कहाँ खेलते कोई स्थान नहीं था। स्कूल जाने का रास्ता भी कीचड़ से भरा था एक दिन बच्चें मैदान में इकट्ठा हुए। उन्होंने सोचा यह गन्दगी दूर हो जाये तो कितना अच्छा हो मैं परी से कहूँगा कि रात में आकर जादू की छड़ी से हमारे गाँव को साफ-सुथरा और सुन्दर बना दे लोकेश ने कहा। यह सुनकर सब बच्चे हँस पड़े। सरिता बोली कही परियाँ भी गाँव की सफाई करती है ?हमें ही कुछ करना चाहिए। सबने मिलकर योजना बनायी दूसरे दिन प्रायः काल बच्चों ने गाँव में फेरी निकाली उनके हाथों में तख्तियाँ और कुदाले थी उन्होंने नारे लगाए-

हमारा गाँव कैसा हो।
साफ-सुथरा सुन्दर हो।।
नालियों को साफ रखो।
रास्तों को साफ रखो।।

इसके बाद बच्चें स्कूल के रास्ते पर पहुँचे उन्होंने फावड़ों से कीचड़ हटाना शुरू किया। छोटी-छोटी कुदालो से नाली बना दी। रूका हुआ पानी नाली में चला गया। तब तक गाँव के बहुत से लोग आ गए बच्चों का काम देखकर वे भी सफाई में लग गये। खेल के मैदान को भी साफ सुथरा कर दिया। गड्ढो में मिट्टी भरकर उन्हें पाट दिया। ग्राम प्रधान जी ने कहा बच्चों तुमनें हमें रास्ता दिखाया है, हम सब मिलकर गाँव को सुन्दर बनाएंये पेड़-पौधे भी लगाएंगे तुम आराम से पढ़ना और खेलना।

सरस्वती
कक्षा-6
ग्राम-जगतपुर

कविता

टरम टरम भाई टरम टरम।
बनी पकौड़ी गरम गरम।।
उठ मेरे भईया कर कुल्ला।
जल्दी से खा ले रसगुल्ला।।

संगीता देवी
कक्षा-3
ग्राम-मनेरापुर

बुझनिया (पहेली)

प्र0- मैं छोटी सी हूँ गुड़िया रानी सर के ऊपर बाती पर स्वार्थ में जीवन जाता कुछ भी बचा न पाती।
उ0- मोमबत्ती।

वो मेरी भूल थी...

मैं ग्राम खम्हरिया का रहने वाला हूँ मेरा नाम निर्दोष कुमार वर्मा है मैं कक्षा 6 में पढ़ता था एक दिन की बात है मैं घर से स्कूल को जा रहा था और रास्ते में मेरे दोस्त ने बताया कि आज भारत और पाकिस्तान का मैच आ रहा है तो उसने मुझसे कहा कि आज हम मैच देखेगे और रास्ते में एक गाँव कुस्तौल था। हम लोगों ने वहीं क्रिकेट देखा और स्कूल में

तीन बचे छुट्टी होती थी। हम दोनों लोग छुट्टी के समय घर को आ गये। उसी दिन हमारे पिता जी स्कूल फीस जमा करने गये थे और हमें वहाँ नहीं पाया तो उन्होंने हमें वहाँ ढूढा फिर घर को चले आये। उसी समय हम दोनों लोग घर को आ गये। तब पिता जी ने हमें बहुत डाटा तबसे हम कभी भी गलती नहीं की है और हमारे स्कूल का नाम सरस्वती विद्या मन्दिर जग मोहन लाला मेघा देवी था और मेरे दोस्त का नाम राहुल था। आज भी हम स्कूल को जाते है और कभी-कभी देर हो जाती है तो हम घर को चले आते है।

निर्दोष कुमार
कक्षा- 6
ग्राम-खुटेहना

मेरा सपना

मेरा सपना है कि मैं पढ़ कर टीचर बनना चाहती हूँ और अपने देश की सेवा करना चाहती हूँ। मैं एम०ए० तक पढ़ना चाहती हूँ। मेरा यह सपना सारे देश वासियों को लाभकारी सिद्ध हो। मैं अपने स्कूल की बाउन्डरी करवाना चाहती हूँ। जिससे हमारे स्कूल की रौनक बढ़े। मेरा यही सपना साकार सिद्ध हो।

सविता भारती
कक्षा- 6

एक कहानी

एक तालाब में एक मगरमच्छ रहता था। एक केकड़ा भी वहाँ रहता था। वे अच्छे मित्र थे। एक गीदड़ पास ही जंगल में रहता था वह बहुत चालाक था वह तालाब के निकट कभी नहीं जाता था। वह जानता था कि मगरमच्छ उसे खा जाएगा। एक दिन मगरमच्छ भूखा था। उसने केकड़े से उसकी मद्द करने को कहा केकड़ा गीदड़ के पास गया। वह गीदड़ से बोला कि उसका मित्र मगरमच्छ मर गया। गीदड़ बहुत खुश हुआ। वह बहुत प्यासा था उसने सोचा वह तालाब पर जाएगा और पानी पियेगा, जैसे ही वह तालाब पर पहुँचा वह केकड़े से बोला मरा हुआ मगरमच्छ हमेशा अपनी पूछ हिलाता है। मगरमच्छ ने सुना उसने अपनी पूछ हिलायी हाँ ! हाँ ! देखो अपने प्रिय मित्र की तरफ वह अपनी पूछ हिला रहा है गीदड़ चिल्लाया और वह भाग गया।

अनुज कुमार मौर्य
कक्षा- 1
ग्राम-खुटेहना

My Expectation

Teenage is a period of time when one has got many expectations and demands.

I too have got many expectations. Many changes have occurred in our class rooms also like earlier all the boys and girls sat together, ate their lunch and shared their lunch with each other, but now a distance has been created. The boys even I want to be with boys in the intervals. Boys with boys and girls with girls want to eat their food. In the games period also we play separately and do not mix up with each other. Now I want teacher should not scold me

infront of the whole class and the most important is that she/he should not punish us outside the class. Earlier when I was small then it was ok if anybody beat me but now if anybody beats me then it is very shameful for me and it will be a question of my dignity and self-respect.

I sometimes want to ride a scooty on my own but the rules of my nation does not allow a child to ride a scooty or car who is below sixteen or eighteen etc. For his I feel very bad because if a child know to ride a scooty then what is the problem if he/she rides it and take it on roods and highways and in traffic. I don't feel or see anything bad or dangerous in it.

Many times I want a complete freedom like I want to go for movies, mills and buy goods for myself on my own with my friends. sometimes I want to go for rides or long drives with my friends.

I also want to have my own mobile phone like all others as my friends have also got them. I also want to have my own personal computer.

I also want to make my ID on facebook and chat with my friends. Sometimes I imagine that perhaps there would have been a cricket team in my school for 8th class and I would have been a batsman in that then how much exciting it would have been, The teams name would have been Spring Dalian Knight Riders. I would love to be a part of it and I would enjoy it very much. I feel like in foreign countries children can go to the school in their fancy dresses so this rule should also be followed in India.

I also want to live alone in my own flat or house and do everything on my own like the foreigner children. But in India it is only possible when we live in a hostel. It is not possible without it as very much rich parents will also not be able to give so much money to their children.

When I grow up I want to become a mechanical scientist as I love and want to make robots, weapons, cars, robotic suits etc. but on the other hand sometimes I want to become a software engineer as I also love computation and I have also heard that there is a better package in software engineering than compared to mechanical engineering. But sometimes I also think that running a bicycle company is also not bad it I establish a company of cycles like her cubs or Hero or soncross. I want to be a very rich man when I grow up and I want to donate crores to the charity when I grow up.

When I grow up then I want to live in a very big mansion. I want my house to be like:- There would be two commandos on the main gate of my mansion. The house will be encircled by a 200 meter lawn at every side. There would be two swimming pools. One for elders and one for children. My garden will be full of well maintained grass and it will have Christmas and cherry blossom trees. It will have a cricket ground, a basketball ground and ramps so that my children will be able to do stunts by their cycles and skateboards. Inside my house there would be eight bedrooms. One for me, one for my parents, one for my brother, two for the guests. It will have a small restaurant of my own, a big living room. Living room will have a home theatre. I will have my personal office in it and a beautiful kitchen. It will also have a gym in it. Every room in my house will have a wash room, a television and an Air Conditioner. In my lawn there will be four fountains and from each fountain different colour of water will be coming out.

There will be an underground parking where my cars will be parked and I will have eight cars of my own which will be two Mercedes, two BMW two Audi, one Ferrari and one Lamborghini. I will have six bikes with me which will be on Ducati, two Hayabusa, one Ninya and two Harley Davidson.

I will also have two personal helicopters. So this is my dream house.

When I will grow up then I will like to marry someone in a church. My wife will be very pretty and she will have very much manners and etiquettes. She will be very polite and will educated. She will have modern thoughts. She will also give me ideas in my business or job, whatever it would be.

When I will grow up then I will like to have one baby boy and one baby girl. My baby boy will be very much handsome when he will grow up and my baby girl will be very much pretty and they both will be very much and very well educated. They both will be very good in sports too. They will be like my two most precious jewels. So now I think that I should come back to my current age.

So now my vacations are going on. But in vacations one thing I the most and it is that the teachers give us a lot of home work but if a child will do only home work in his/ her vacations then how it can be a vacation. So this is a great dislike. But for me I think that in vacation a child should enjoy at his content. In vacations a child should leave all his tension of examination and stress of studies behind and enjoy, enjoy and enjoy at his content or satisfaction.

Ayan
Class-8
(आयन लखनऊ में रहते है जो पिछले दो सालों से रोजी-रोटी बालमंच लखीमपुर के सदस्य है)

Poem

After my bath
I try, try, try
To wiper myself
Till m dry, dry, dry
Hand to wipe
And finger and toes
And two wet legs
And a shiny nose
Just think how much
Less time 'I', d take
If I were a dog
And could, shake, shake, shake

Name Mukesh Kumar
Class 5th

What school looks like in Germany

My name is Marie. My home country is Germany. Today I am telling you a little bit about what it is like to grow up and to go to school in Germany. I am born in a city called Munich in the south of Germany.

In the Kindergarten
When I was 3 years old my mother sent me to the kindergarten. The kindergarten in Germany is voluntarily, but every child has the right to go to the kindergarten. My mother brought me in

the morning and picked me up in the afternoon. There are different groups in the kindergarten and mine was called the hedgehog group. We were 12 children and 2 nurses. Here, I could play with many children. Our favorite activity was to go to the playfield in front of the kindergarten, where we pretended to be pirates on a big ship. Sometimes the nurses looking after us were reading out stories. While playing we were taught letters and numbers. In the morning my mother packed me a lunch box, often with fruits, vegetables and bread. If I stayed longer than 12 o'clock, we all ate together in the kindergarten. A local hospital brought warm food and drinks.

Life in primary school

When I was 6 years old I had to leave the kindergarten and say goodbye to my friends there to start primary school, which lasts 4 years in the state where I live in. The school system in Germany is free; you do not have to pay any fees. It is also compulsory, which means that every child has to visit the school at least 9 to 12 years. I remember my first day at school. I was very nervous. As it is the habit in Germany my mother gave me a first day of school goody bag. My school day used to start at 8 in the morning and lasted for 5 hours. Here together with 25 other children in my school I learned many interesting things: how to read and write German, to calculate. One of my favorite classes was “Sachkunde” where we learned about the environment, different animals or society. We also had classes in English, music, art, sport and religion. Every half year we elected 2 other students from our class to be our representatives, to make sure that our voice was heard, especially if there were any problems with our teachers or within class.

In the afternoon my mother would normally pick me up from school or I walked home with my friends. My mother prepared something warm to eat. After lunch I did my homework. I relaxed and went out to the field to play with my friends. In the evening I prepared for the next day, before having dinner with my family and going to bed.

Secondary School

When I was 10 years old my mother asked me which secondary school I would like to go to. There are 3 different types of secondary school in Germany: the “Hauptschule”, “Realschule” and “Gymnasium”. Each has a specific focus in order to develop diverse interests and skills. One being more practical, the other one more academically orientated. I decided that I would like to continue with the Gymnasium to be able to learn more languages. Next to English, Latin and French I had many more courses, such as mathematics, geography, history, politics, biology, physics, chemistry, as well as sport, music, art and religion. My school day lasted normally 6 to 8 hours, starting at 8 o'clock in the morning. I was not always a good student, but my mother would never be angry with me and encourage me to do better next time. Our teachers would motivate us to be critical with what we had heard or read. I very much enjoyed the Gymnasium, as my teachers were very supportive and friendly. After 12 years of school, 4 of primary and 8 of secondary school, I passed the final exam the “Abitur”, ready to go to university.

Marie Findisen

(मेरी फिंडिसेन म्यूनिख जर्मनी की रहने वाली है जो एम एवं रोजी-रोटी में वालियंटियर के रूप में कार्य करती है)

संपादक मंडल

धर्मेन्द्र कुमार भार्गव, आशुपोष राज, अनीता देवी, खुशबू श्रीवास्तव, अवधेश कुमार, नवनीत कुमार, कविता देवी, जयेन्द्र सिंह, विनीत कुमार, रुबी देवी, रीता देवी, कुनाल, कुलदीप कुमार, शिवमंगल राज, संध्या देवी, कामिनी वर्मा, अंशू देवी, निधी देवी राज, निधी देवी, नीरज कुमार, सरस्वती, संगीता देवी, निर्दोष कुमार, सविता भारती, अनुज कुमार मौर्य, आयन, मुकेश कुमार, मेरी फिंडिसेन

संपादन सहयोग

राजेश कश्यप एवं रागिनी

समन्वय

राजेश कश्यप

वित्तीय सहयोग

एक्शनएड इण्डिया

इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं, उससे प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

(सीमित वितरण हेतु)

Aim

प्रधान कार्यालय

ए–8,सर्वोदय नगर, इन्दिरा नगर, लखनऊ– 226016 • www.aimindia.info

शाखा कार्यालय

ग्राम–रतहरा, पो0 कस्ता, जिला–लखीमपुर खीरी, उ0प्र0